

‘बालसंस्कार प्रशिक्षण शिविर’ बुरहानपुर

श्रीगोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान एवं गुरुकुल पब्लिक स्कूल के सहायोजन में ‘बालसंस्कार प्रशिक्षण शिविर’ किया गया। इस प्रकार के अनुपम आयोजनों की आज के समय में अति आवश्यकता है जहां बाल मन पर संस्कार और संस्कृत को अंकित कर उनके जीवन की दशा और दिशा उत्तम पथ पर प्रशस्त हो। श्री श्री १००८ महाराज श्री गिरिराजजी शास्त्रीजी ने दीप प्रज्ञवलित कर आशीर्वचन प्रसारित किये।

पूज्य वेदान्ताचार्य श्रीगिरिराजजी शास्त्रीजी ने अपने उद्घोषन में कहा कि आधुनिक युग में नई पीढ़ी हमारी परम्पराओं पर सबाल पूछती है। हमारी परम्परा में साइंस और लाजिक है जिसकी समझ होना सबके लिये जरुरी है। किसी भी विषय की यथार्थ जानकारी से बच्चों में उत्साह एवं जागरुकता का संचार होगा। और तब भविष्य में यही बालक आने वाली पीढ़ियों को हमारी सनातन परम्परा प्रसारित कर सकेंगे।



बडोदरा- “श्रीगोपीनाथ जी प्रभु चरण” के प्राकट्य उत्सव

प्रति वर्ष की तरह इस बार भी “श्रीगोपीनाथ जी प्रभु चरण” के प्राकट्य उत्सव का आयोजन “श्रीगोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान” व “गोपीनाथ ग्वाल मंडल (उत्सव समिति)” के सौजन्य से किया गया। वल्लभ कुल के पू. पा. गो. १०८ श्री मधुरेश्वरजी महाराजश्री, पूज्यपाद गुरुवर्य पू. पा. गो. १०८ श्री चंद्रगोपालजी महाराजश्री, पू. पा. गो. १०८ श्रीयोगेश्वरजी महाराजश्री का मंगल मय सानिध्य और आशीर्वचन का लाभ प्राप्त हुआ। आचार्य जनों ने श्रीगोपीनाथ जी के बारे में श्रान्त विचारों का खंडन करते हुए सम्ब्राद्य में स्थापित और श्रीमहाप्रभुजी द्वारा रचित शास्त्रों में वर्णन के आधार पर विषेश रूप से यथार्थ बातों को बताया। पूज्य श्री गिरिराजजी शास्त्रीजी ने आगे श्रीगोपीनाथजी द्वारा रचित ‘साधनदीपिका’ और ‘सेवाश्लोका’ आदि ग्रंथों के बारे में उद्घोषन किया। पूज्य श्रीमधुरेश्वर जी महाराजश्री ने बहुत सराहना करते हुए कहा कि नवोदित युवा विद्वान् श्रीगोपीनाथजी के नाम से सर्व प्रथम संस्था खोल कर उनके प्रति जाग्रति लाने का काम और खोज का काम श्रीवृजेश्वरमारजी और श्रीगिरिराजजी शास्त्रीजी कर रहे हैं जो गौरव की बात है इन उदात्त कार्यों में सदैव हमारा सहयोग और आशीर्वाद आपके साथ है। पूज्य आचार्यजनों और पू. प्री भगवत पांड्याजी आदि की गरिमामय सत्रिधि में यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

BOOK POST PRINTED MATTER



श्री गिरिराजजी शास्त्री

संसार के समक्ष जितनी भयंकर और विस्पृष्टक समस्याएँ आज उपस्थित हुई हैं उतनी आज से पूर्व कभी भी नहीं थीं। ये कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि विज्ञान की चरम विकसित स्थिति ने हम मनुष्यों की हृदयस्थ भावों की भूमिका एवं दिशा को बदल के रख दिया है। जितनी सुविधाएँ विज्ञान के तहत बढ़ीं हैं उतना ही उसके अयोग्य उपभोग या दुरुपयोग से दिक्षक्तें परेंशानियां बढ़ी ही हैं। किन्तु ये हमारे अन्दर के संयम- समझ- और सुव्यवस्था से ही संतुलित हो सकता है और हम सही अर्थ में आनंद-शांति और सहजता प्राप्त कर सच्चे अर्थों में वीरत्व प्राप्त कर सकते हैं।

हाँ ये जरुर हमें ज्ञात होना चाहिये कि वीरत्व (वीरता) सही मायनों में है क्या? वीरत्व का प्रथम स्थाई भाव उत्साह है, और उत्साह हृदयगत भाव है, बुद्धि का व्यापार मात्र नहीं। जैसे प्राचीन समय में एक दूसरे के विरोधी वीर एक दूसरे के प्रत्यक्ष खड़े हो कर अपनी वीरता एवं शक्ति को सिद्धान्तों उसूलों और नीति के अधार पर प्रदर्शित करते थे। किन्तु आज प्रत्यक्ष की अपेक्षा वैज्ञानिक गणित के सिद्धान्तों के आधार पर वैज्ञानिक साधनों को जुटाकर कूटनीति-दुष्ट राजनीति के द्वारा दूसरों को धमकाने डराने वाला वीर समझा जा रहा है। पर सही में वीर वह होना चाहिये आज के परिप्रेक्ष्य में जो कि अपने मन-विचारों-इन्द्रियों को स्थिर कर प्रत्यक्ष रूप से दुष्टतत्वों से लड़ सके और अपनी शांति-सहजता-सरलता-और आनंद को बरकरार रख सके।

वर्तमान समय एवं स्थिति में अनेक प्रकार की सामाजिक कुरीतियाँ चल रहीं हैं जिन्हें दूर करने का प्रयास करते समय अनेक प्रकार के अवरोध सामने आयेंगे पर उन सब से घबराये बिना उन्हें अपने आप पर प्रभु पर सद्गुरु पर पूर्ण आस्था रखते हुए पार करने वाला और नूतन समयोचित परिवर्तन परंपराओं में या समाज में लाने में अव्यंत उत्साहित होकर उसे तर्कसंगत विशिष्ट ज्ञान से सिद्ध करे वही वीर कहला सकता है।

तो आईये कुछ ऐसी वीरता प्रगट करने अपने अंदर का दीप जला के हमारे अंतर आलोक को प्रकाशित करने का संकल्प इस दीपावली को लें और उस हेतु कठिबच्छ हो निरन्तर आनंद को स्थापित कर सामाजिक शोषण से बचाकर नूतन समाज की स्थापना में नींव रखें।



नी.ली.गो.धष्टपीठाधीश्वर
१०८ पू.पा.श्रीव्रजरत्नलालज्ज महाराजश्री
(सुरत)

भूष्णावतारे त्वधुना हरौ तद्वशगः सुरा , नानामतानि विषेषु भूत्वा
कुर्वन्ति मोहनम् , अयमेव महामोहो , एतनमतमविज्ञाय सात्विका अपि
वै हरिम् , मतान्तरै न सेवन्ते तदर्थं ह्वेष उद्यमः ।

आ प्रकारे सात्विकोने अनेक दीते भ्रमणााओ ना प्रसंग आवतां
श्रीदृष्टा भजन धूटी गयुं अने भगवत्प्राप्ति ३५ मुण्ड्य पञ्चार्थी
ज्ञापो विमुख थया। अने भागवत ११ रुद्धार्थमां बताव्या प्रमाणे
अनेक पञ्चार्थी भानवा लाग्या।

धर्मग्रन्थे के यथाशान्ये कामं सत्यं दमं शमम् , अन्ये वदन्ति स्वार्थं वा ऐश्वर्यं त्यागभोजनम् ।
वदन्ति कृष्णप्रेयासि बहूनि ब्रह्म वादिनः ।

आ अनेक वादो स्वबुद्ध्यनुसार चालवा लाग्या। वेदार्थं समज्वा शक्तिहीन थया त्यारे
प्रस्थानयतुष्टय पूर्वक निरुणु भक्तिनुं प्रागट्य करवानी ईश्वराथी स्वयं श्रीदाकोरज्जु
श्रीमदाचार्यरथा श्रीमहाप्रभुज्ञ स्वङ्गे आ भूतलपर पद्धार्या। अने जो ना पद्धार्या होत तो
..सृष्टिव्यर्था च भूयान्निजफल रहिता . आ शुद्धप्रेम वाणी सृष्टि व्यर्थ चय होत . जे ज्ञवोपर
विशेष अनुग्रह छे प्रभुनो ते ज्ञवोने केवल अनुग्रह द्वारा ज स्व प्राप्ति काराववा स्वयं
वरणा करे छे। अने आ दैवी ज्ञवोमां सूक्ष्म तापकलेश याय छे प्रभुयी हजारो वर्षोयी विषुटा
पद्धावाने कारणो अने आ तापकलेश ज थे ज्ञवने धर-पुत्र-परिवार-प्राण-देह-आत्मा अने
येना धर्मो सहित प्रभुश्रीना शरणे लावे छे अने सद्गुरु कृपायी शरणे आवी प्रभुनो दास
बने छे। दात्य धर्म अमां प्रगट याय छे अने मात्र श्रीप्रभुज्ञ अनेनुं सर्वस्व बने छे अने
अनन्य प्रेम द्वारा प्रभुनो पोताना। बनावे छे अने आयी प्रभु स्व प्रमेय बल थी अना सर्व
प्रतिबन्धो दूर करी स्वप्राप्ति करावे छे अने ऐने प्रेम करता वर्धजाय छे अने प्रेम करता वर्धजाय छे अने

यथार्थ

क्य है यथार्थ?
और क्यों अवश्य है अब?

श्री गिरिराजजी शास्त्रीजी



सही अर्थों में धर्मगुरु आपके अंदर जो है उसे प्रगट कर और प्रगति के मार्ग पर आपको अग्रसर करना ही उनका लक्ष्य होता है अतः गुरु में कभी राग द्वेष होता नहीं पर हमें उनके स्वरूप का और हमारे लिये उन्होंने कौन सी साधना निश्चित करी है इसका ज्ञान न होने से हम उन्हें नहीं समझ पाते और कुछ ऐसा कर बैठते हैं कि हमारी साधना की गति धीमी पड़ जाती है। जैसे कि हरेक पौधे को सम्भालने का तरीका व्यवस्था भिन्न भिन्न होती है पर वह कोई किसान या पेड़-पौधों का जानकार (माली) ही समझ सकता है, और जैसे कोई (मूर्तिकार) शिल्पकार जब किसी पत्थर को देखता है फिर चाहे वह - टेढ़ा - बांका - या दूटा - फूटा - काला या मैला ही क्यों ना हो पर .. शिल्पकार के हृदय में वह एक मूरत बसी होती है और वही उस पत्थर में दिखाई पड़ती है पर दुसरे व्यक्ति अगर वहां खड़े हों तो सोचेंगे कि यह मनुष्य पागल है इसे ऐसे बेकार पत्थर में नाचता हुआ कृष्ण दिखाई पड़ता है?

જे सरળताथी, सહजताथी, कारणके भागवतनो एक नियम हे के सुगमताथी उपाय बतावावो. कृष्ण अकिलभृत कर्मा हे अने भागवत तो कृष्णसुप्त हे. अने अकिलभृत कर्मा जेता एक तमारे तमारा जुवन प्रवाहने अंतःकरणथी रोडी देवा माटे सतत तमारी जातने कृष्णकथानी अंदर रोडी हो. सौथी पहेला तमे आजे तप करवा तमे तमारे इधर छोड़ी नेआव्या. छोड़वु पड़यु ने? आ पण एक जातनुं तप हे परंतु आ तप सदानु नथी, आपडो संकल्प केटलो हे? मारे सात दिवस सांभाळवु छे. बीजे शब्द क्यां? हंमेशा ध्वनि अने प्रतिध्वनि, ध्वनि मारे सात दिवस सांभाळवु छे. प्रतिध्वनि सात दिवस पांची दाईनो घोडो आठमा दिवसना आपडे दुनियाना अटेला प्रोग्रामो गोडवी ने आव्या होईशु के जे आपडे सात दिवसमां पण नहीं करवाना होईथे. आठमा दिवसे थई जवाना. जे आवे तेने तमे आठमे दिवसे मणजो. आपडे सात दिवसनो त्याग कर्यो बहु उताम परंतु आपणो संकल्प केटलो हे मनमां?

अटेले आपडी अविद्या. दूर थती नथी जे विद्वनी माफक के परिक्षितनी माफक आपडो जो संकल्प थयो हो ते, ए संकल्प सहित अंही भागवतशु जेता एक ज्ञानने कृष्ण कथानी अंदरज व्यस्त करवु. आ निर्णय लेती वधते बहु भोडु बौद्धिक तप, बहु भोडु मानसिक तप, अने बहु भोडु शारीरीक तप करतु पड़े हे. आ योथा आद्यायनो सार.

पांचमा अद्यायमां भक्ति कोनी करवी? केवी रीते करवी? आजे संसारमां संप्रदायो घणा हे. अने भक्तिनी वातो पण जुदी जुदी कराय हे. भक्ति कोनी करवी? राष्ट्र भक्ति, मानव भक्ति, प्राणी भक्ति, देह भक्ति. भक्ति शब्द अनेक ज्ञायाए लागेलो हे. हवे आपडे भागवतशुना पांचमा अद्यायने पुछवा भागीये छीये? भक्ति कोनी करवी? अने केवी रीते करवी? भागवतशु कहेला भागी हे के स्वप्ननी विस्मृति आ भक्तिथी दूर थाय. कई भक्ति करवाथी? तो कहे कृष्णानु पूजन जे कृष्ण हेतु नेनु पूजन. हवे तेमा कृष्ण शब्द बहु भोटो हे अटेले तेनी व्याख्यामां बहु जतो नथी. कृष्ण एटेले जेनी अंदर बधुज समाविष्ट हे. आ विश्वनां बधाज पदार्थो जेनी अंदर समाविष्ट हे.

जनकोद्युष्मेव सातिको राजस सत्था - पुष्टिमार्गस्थ मुख्यत्वात् विपरिता गते गुणी:

एकादश स्पृंदनी मुक्तिलीलामां जे प्रथम ब्रह्मभाव अने सायुज्य नुं जे जुव मुक्ति प्रकरण हे. एकादश स्पृंदना एकभीस अद्याय तेमां १ थी २० अद्याय जुव मुक्ति प्रकरण अने ३० अने ३१ ईशमुक्ति प्रकरण. आ बज्जे प्रकरणोनी अंदरथी तेना पेटा प्रकरणो बे छे बज्जे ना जुवमुक्ति प्रकरणानु पहेलु पेटा प्रकरण ए ब्रह्म भाव प्रकरण हे ते १ थी २० अद्याय अने ६ थी २० ए कृष्णयोग प्रकरण. एम बे पेटा प्रकरणो थया. एमां ब्रह्मभावनी अंदर भमतानी निवृति अने कृष्णयोग प्रकरण वडे अहंतानी निवृतिनी प्रक्षिया आमा बतावामां आवी हे. तेवीज रीते इशु मुक्तिप्रकरणां ३०मो अद्याय ए ईशनी भमता निवृति अने ३१ भी अद्याय ए ईरानी सहंता निवृति. आटलो ख्याल राख्यो एटेले आगजनां विषय वधारे ख्याल आवतो जश. आमा जे जुव मुक्ति प्रकरण हे तेमा बधानीज मुक्तिभनावावानी हे.

तेम छतां पण एक प्रतिक तरीके बे अधिकारीयो बतावावाना हे. तेमां एक अधिकारी हे जनक अने बीजे अधिकारी हे उद्धव. आम बे अधिकारीयो आमा भुख्य मनाया

हे. तेमां जे जनउ हे ते सातिक हे अने उद्धव राजस हे. आनी अंदर प्रश्न ए थाय हे के भगवद् गीता ऐवु कहे हे. उद्धव गरजन्ति सत्पत्ता. मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।

ज्यन्यगुणवृत्तिस्था अधो गरजन्ति तामसाः॥ गीता. १४.१८। जे सातिको हे तेनी हंमेशा उद्धर्गति थाय हे. राजस अने तामस करतां सातिको उच्च कोटीना हे. साधारण रीते हुनियामां एम भोलीये छीये के हमे तो राजस स्वभावना पण आ भाई बहु सातिक. हवे भागवतशुमां गोटातो शु थई गयो के जनकराजाने ब्रह्मभाव मुक्ति प्राप्त थई अने उद्धवने कृष्णयोग प्राप्त थयो. ब्रह्मभाव करतां कृष्णयोग उताम हे. श्री महाप्रभुजु प्रश्न करीने एनो जवाब आपे हे के सातिकने कृष्णयोग थवो जोईये अने साजसोने तो ब्रह्मभाव थाय के केम ? ऐनी ज्ञायाए उल्लु कुम ? एटेले महाप्रभुजु शोटमां उतार आपे हे.

पुष्टिमार्गस्थ मुख्यत्वात् विपरिता गते गुणी : आमां पुष्टिमार्गस्थ फले - एटलु अध्याहार हे. फलमां कोईपणा प्रकारनुं विश्वमां जे फल थाय हे तेमां मुख्यता भगवानना अनुग्रहनीज हे. फल भगवाने पोताना हाथमां राख्यु हे. कुण, देवी-देवता, मंत्र-तंत्र, जंत्र, सिद्ध, योगी कोईना पण हाथमां ढल नथी. आ हुनियामां जे कांઈ पण फल थाय हे अने प्रमाणायी के मयैयैव विहितान् वितान् भगवद् गीता. जे लोको देवताओनु यज्ञन

करे हे, ते लोकोने जे देवो तरफ्थी फल थाय हे ते मूण तो माहुं आपेलु जफल थाछे कारण के देवताओ पासे कोई फल हे ज नहीं. आजे हुं तमने एक वात पुछ. आजे अंहिया जे लोको बेटा हे तेमांयी कोई व्यक्तिलक्ष्मीविलास पेलेसनुं दान करी दे कोईने जाव तमने लक्ष्मीविलास पेलेस आप्यो. बोंभे थी आव्या हे ते एम कहे हे तमने आपु विकटोरीया टर्मिनस आपी दीद्यु तो मने मली गयु? ना - केम नहि? कारण के विकटोरीया टर्मिनस उपर के लक्ष्मीविलास पेलेस उपर तमारी कोई सताज नथी एटेले ज्यां सुधी कोई वस्तु पोताना अधिकारमां के मालिकिमां न होय ते न आपी शके. एक कायदानी गुंयनी वात कहु के कोई व्यक्तिए वीलमां लाख्यु के मारी आ भिलकत मारा. मर्या पछी इताणाने बद्धी आपी देवी. थई गयु. हवे ए माणस मर्यो नथी, परंतु जेने आपवामां आव्यु हे ते मरवा पड्यो. हवे जे कोई डोक्युमेट करीने जाय के मने आ वीलनी द्वारा जे भिलकत मलवानी हे तेनो अधिकार आने आपु हुं. परंतु जे कोईने पूछशो तो जे वस्तु हाथमां आवी न होय ते वस्तु बीजाने आपी शकाय नहि. तो तेवीज रीते जे वस्तु पोताना अधिकारमां ना होय ते बीजाने ना आपी शकाय. हवे आ विश्वनी कोईपणा वस्तु परमात्माए जुवमाग्रने देवो पण अंततो गत्वा जुवो हे. अने एज वात श्री महाप्रभुजु कृष्णाश्रय थंधमां कहे हे.

प्राकृता: सकला देवा: प्राकृता नाम जुवा: प्रकृति संभवा: अने गणितानन्द के बृहत कहीने ब्रह्म विष्णु ने शीव वि. जे इश्वर देवो हे तेमनी स्थितिनो अंततो गत्वा अक्षरात्मकज हे. जे भगवान द्वारा नियम हे. आ विश्वनी कोई पण वस्तु परमात्माए जुवमाग्रने देवो पण अंततो गत्वा जुवो हे. अने एज वात श्री महाप्रभुजु कृष्णाश्रय थंधमां कहे हे.

तेम छतां पण एक प्रतिक तरीके बे अधिकारीयो बतावावाना हे. तेमां एक अधिकारी हे जनक अने बीजे अधिकारी हे उद्धव. आम बे अधिकारीयो आमा भुख्य मनाया



विना आरोग्यं वृथा लक्ष्मीः

जीवन में ऋतुअनुकूल परिवर्तन एवं सावधानियाँ पाती, जीवन में प्रसन्नता, स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य के लिए व्यायाम नितांत आवश्यक है। प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर भगवत् स्मरण कर प्रातःकालीन प्राणवायु के सेवन से आरोग्य स्थिर रहता है। प्रातःकालीन वायु सेवन तथा प्रफुल्लित प्रकृति में भ्रमण सह खों रोगों की एक रामवाण औषधि है। शरीर एक मंदिर है जिसमें हमारी आत्मा विराजमान है इसलिए इस शरीर रूपी मंदिर की अन्तर्बाह्य स्वच्छता-स्वस्थता जरूरी है। आयुर्वेद के मतानुसार भी व्यायाम करने से शरीर का विकास होता है। शरीर में शिथिलता जल्दी नहीं आ जाती है।

- डा. शैलेन्ड्र

किरण शरीर पर पड़ने से हमारे शरीर के अनेकों रोग-कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। सूर्य-रशिमयों में विष दूर करने की भी शक्ति है। अतः प्रातःकाल संध्या वन्दनादि से निवृत्त होकर प्रथम प्रहर में जब तक सूर्य की धूप विशेष तेज न हो तब तक एकांत में केवल एक वस्त्र पहन कर और मस्तक हृदय-उदर आदि सभी अंग खुले रखकर पूर्वाभिमुख भगवान् सूर्य के प्रकाश में खड़ा होना चाहिए।

व्यायाम प्राणायाम और सूर्य-रशिमयों के साथ-साथ जल तत्व का भी शरीर स्वास्थ्य में अत्यंत महत्व है। स्वस्थ को बनाये रखने के लिये कब और कितनी मात्रा के जल पीना चाहिए इसके नियमों का पालन करना चाहिए। जैसे सुबह उठते ही आधा से एक लीटर तक सादा पानी पीना चाहिए। यदि पानी तांबे के बर्तन में रात से रखा हुआ हो तो अधिक लाभप्रद होगा। सप्ताह में केवल निम्बूपानी पीकर एक दिन का उपवास करना पाचन शक्ति को सशक्त करने और स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिये उपयोगी है। दिन और रात में कम से कम तीन लीटर पानी पीना शरीर आरोग्य के लिये उत्तम है। क्योंकि इससे शरीर की अशुद्धि मूत्र के द्वारा बाहर निकल जाती है। जल तत्व के साथ साथ पृथ्वी तत्व का भी शरीर स्वस्थ पर विशेष प्रभाव होता है। जैसे सुबह सुबह हरी दूब पर नंगे पांव टहलना भी काफी लाभप्रद होता है, पैर पर दूब के दबाव से तथा पृथ्वी के सम्पर्क से कई रोगों की चिकित्सा स्वतः हो जाती है।



खुल्ला प्रश्ना टाँच्या

- राधिका दवे

प्र. १ श्रीमद् भगवद् गीता के पहले अध्याय के पहले श्लोक में धृतराष्ट्र ने संजय से क्या प्रश्न पूछा है?

उ. धृतराष्ट्र पूछ रहे हैं कि 'धर्म भूमि कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा से एकत्रित हुए और पांडु पुत्रों ने क्या किया?

प्र. २ दुर्योधन के पक्ष से युद्ध में कौन कौन योद्धा थे?

उ. दुर्योधन के पक्ष में स्वयं दुर्योधन, भीम, कृपाचार्य, कर्ण



आराध्य की अनन्य भक्ति साधना हेतु धर्म युक्त जीवन की महत्ता:-
सृष्टि का मूल स्वरूप श्री कृष्ण है। वेद कहता है कि समस्त सृष्टि ब्रह्मात्मक है। और भगवान का स्वरूप शास्त्र समझाते हैं कि भगवान सत, चित् और आनन्द है।

मतलब भगवान श्रीकृष्ण सत्य स्वरूप, ज्ञान स्वरूप, और पूर्ण आनन्द स्वरूप हैं।

रसरूप प्रभु की प्राप्ति के लिए शरणागति और भक्ति ही मार्ग है। इस भगवद् भक्ति और शरणागति की उत्तमता के लिये हमें सदविचार और सतकर्म से संस्कारी बनना चाहिए।

संस्कार की आवश्यकता क्यों?

हमारे अस्तित्व के दो हिस्से हैं। जन्म और कर्म.. जन्म हमारे हाथ में नहीं है पर कर्म हमारे हाथ में है, सदकर्म से इंसान संस्कारी बन सकता है और स्वयं का और समाज का भला कर सकता है। संस्कार का मतलब वस्तु के अंदर छुपी हुई उत्तमता को बाहर प्रकट करना। मानव में रहे हुए सद गुण को प्रकट कर के उत्तम व्यक्ति बनना वो मानव के संस्कार हैं।

असंस्कारी व्यक्ति आदरणीय नहीं होता। वह अपने जीवन का सद्गुप्योग भी नहीं कर पाता। हमें मानव देह मिली है उसको आलस, दुःख और धर्म विमुखता में व्यतीत करना मुर्खता है। इसलिए संस्कारी बनाना जरूरी है। संस्कारी बनने के लिए अच्छे विचार और अच्छे कर्म करने चाहिए।

सद विचार और सतकर्म:- किसी भी क्षेत्र में योग्य लक्ष्य को तय करके हम उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कर्म करते हैं। योग्य लक्ष्य की



श्री वृंदावन शास्त्री



गोपाष्टमी

- सुनीता शाह

कार्तिक सूद अष्टमी के दिन पहली बार प्रभु को यशोदा जी ने सुंदर शृंगार करके श्रीहस्त में लकड़ी देकर गोप सखाओं के साथ बन में गौचारण के लिए भेजा था। पुरुषार्थ की भावना के साथ पुत्र रूप में बाल्यावस्था से ही स्वकार्य करने का और पिता के व्यापार के विकास हेतु गौचारण के लिए माता-पिता ने भेजा था।

निकुंज लीला में प्रभु ने गौ चारण के माध्यम से पशु, पंक्षी, गोप, गोपीजन जैसे नित्यसिद्ध भक्तों को रस का दान किया। प्रभु ने टेर कदम, मधुवन, कामोदवन .. जैसे सभी वनों में गौचारण लीला करी है। गाय के भाव व्रजजन जैसे मुग्ध भाव होने के कारण गायें व्रज भक्तों का स्वरूप हैं और निःसाधन भक्त होने के कारण प्रभु गायों का रक्षण करते हैं। ऐसे ही जब जीव निःसाधन बन कर प्रभु सेवा और स्मरण करे तो प्रभु कृपा कर उन पर अनुग्रह करते हैं।

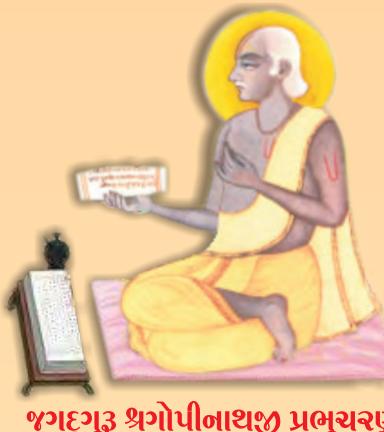
गौचारण का भौतिक भाव गायों को चारण कराना है, और आध्यात्मिक भाव.. 'गौ' अर्थात् 'इंग्रियां' और 'चारण' अर्थात् 'पोषण' है, और इस भाव के अनुसार प्रभु अंगीकृत जीव को विरह दान देने के लिए गौ चारण हेतु बन में पधारते हैं।

प्रभु को गायें अति प्रिय हैं। गाय के पृष्ठ भाग में ब्रह्मा, गले में विष्णु, मुख में रुद्र, मध्य में सर्व देवता, मूत्र में गंगा आदि पवित्र नदी, गोबर में लक्ष्मी जैसी शुद्धता, नेत्र में सूर्य-चंद्र के स्थान के भाव से गौ पूजन सर्वश्रेष्ठ है। जब प्रभु गौ चारण के बाद वेणु नाद करते हुए बन से लौटते हैं, तब प्रभु कृपा से कोई दैवीजीव को प्रभु के दर्शन हो इस लालसा से गोपाष्टमी के दिन भक्त जन गायों के गण को यथा शक्ति धुली, लहू आदि का चारण कराते हैं।



श्रीवृषभनंदन गोपीनाथ

यदनुग्रहतोजनतुः सर्वदुःखातिगोभवेत् । अग्रद्गुड श्रीविट्टलनाथजु विचित भ्रात वंदना ॥
तमहंसर्वदा वन्दे श्रीमदवल्लभनन्दनम् ॥ - श्रीमती जगृती गोहील



अग्रद्गुड श्रीगोपीनाथजु प्रभुचरण

श्री गोपीनाथजु अप्रेम अने स्वरूप सेवा ने ज मुख्य मानी ने अमारा कत्याण माटेसाधन दीपिका मां आगाम आपण नेराग-भोग अने शृंगार ना विषय ने खुब ज सरल अने सुंदररीतयी समजावी रह्याछे। सामान्य रीते लोको मां श्री गुंसाईजु प्रभुयरणद्वाराराग-भोग-शृंगार नो विषय विस्तारितछे अवीजाणकारीछे। जेफक्तत्रियाध्यायन नी उषाप नुं ज कारणाछेते आ ग्रंथ द्वारा सिद्ध थायछे।

राग, भोग, शृंगार ने समजावता श्री गोपीनाथजु जणावे छे के - (स्मरेभदगतो लीलां गायेतस्य गुणान्गिरा) प्रभु ना स्वरूप अने लीलाओनुं स्मरण सहीत भावपूर्ण वाणीथीकीर्तन गान करवुं।

(अलंकृत्य ततः सिहासनेमुपवेशयेत्, हैयंगवीनपवचाल्नैःताम्बूलैः सुजलैर्यजेत) अर्थातः प्रभु ने जगावी सर्व प्रथम सिंहासन ने अने पछी प्रभु ने अलंकृत करी प्रभुनो भिराजमान करवा अने त्यारबाद प्रभु ने सुंदर पक्वान अने पान -बीडी साथे शीतल सुगंधित जण अरोगाववा। तेमज (ततोनीराजनं कार्य मंगलं गीतवाघकैः) आम कहेता जणावे हे के मंगाणा अने राजभोग आरती ,कीर्तन गान मंगल रीते वाध, पभावज, तानपुरा, ईत्यादी सहीत करवुं। (श्रंगाररंजितैर्वस्त्रैश्चित्रैराभरणैरपि) प्रभु ने अतु अनुसार सुंदर रंग-बेरंगी वस्त्रो, शृंगार अने आभरणो साथे सुगंधि द्रव्योथी भाव पूर्वक सेववा। आनी साथे श्री गोपीनाथजु अलंकार अने वस्त्रो ना प्रकार नुं पण वर्णन कर्यु छे। (तोर्यर्त्रिकेनत्रापि धूपदीपादिनार्तिकम्) आगाम आज्ञा करे छे के धूप-दीप आरती हमेशा ग्राम धंटा, वाध, तथा कीर्तन गान साथे करवा केम के (बिना नृत्य गानेनहरि प्रीति कथं भवेत) आवी आज्ञा आ ज ग्रंथ मां करीने समजावे पण छे के नृत्य, गान, संगीत, विना प्रभु मां प्रेम केवी रीते संभव बने ?

माटे श्री गोपीनाथ महाप्रभु आ मार्गामां भक्ति ना मुख्य बे साधन, जेनी आज्ञा स्वयं श्री महाप्रभुजु अप्रेम अनुभूति अव पुष्टि भक्ति प्राप्त हो सकती है, जैसे व्रज भक्तो को प्राप्त हुई। यह बात प्रभु स्वयं गीताजी में आज्ञा करते हैं....

प्रभु स्वरूप का ज्ञान और प्राप्ति केवल भक्ति से...

हमें पुराणों में कई स्थान पर पढ़ने में आता है कि भगवान के स्वरूप को जानने और प्रभु को पाने हेतु ऋषिमुनि असंख्य वर्षों तक ज्ञान साधना और कई तरह की तपस्या करने के पश्चात भी प्रभु स्वरूप को जान अथवा पा नहीं सकते हैं। व्रज भक्तो ने कोई दान-व्रत-तप जैसे साधनों का सहारा लिया नहीं था। फिर भी साक्षात् प्रभु उन के बीच प्रकट हुए थे। इसकैसे ?

परब्रह्म श्रीकृष्ण अन्य देवताओं की तरह यज्ञ-मंत्रजाप ।। तप जैसे साधनों के माध्यम से कोई फल देने के लिए बंधे नहीं हैं। शास्त्रों में व्रत, तप, उपासना, यज्ञ, मन्त्र, कर्म आदि अध्यात्मिक प्राप्ति के साधन कहे गए हैं। ये किसी भी साधन के माध्यम से हम श्रीकृष्ण के स्वरूप को जानने के और पाने के लिए असमर्थ हैं। और इसलिए किसी भी साधन के आश्रय से और उसके अभिमान के साथ श्रीकृष्ण को जानने और पाने की कोशिश कभी सफल नहीं होती।

**“श्री कृष्ण
कर
स्वरूप ज्ञान”**
- सुनीता शाह

केवल प्रभु श्रीकृष्ण की कृपा मात्र से, बिना किसी साधन से श्रीकृष्ण अनुभूति अव पुष्टि भक्ति प्राप्त हो सकती है, जैसे व्रज भक्तो को प्राप्त हुई। यह बात प्रभु स्वयं गीताजी में आज्ञा करते हैं....

“नाहं वै दैर्नतपसा न दानेन न चेज्यया ।
शक्य एवं विधोप्रस्तु दृष्टवानसि मां यथा ॥११-५३॥
भक्तया त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन ।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेनप्रवेष्टुं च परंतप ॥११-५४॥

अर्थातः - हे अर्जुन, न मुझे देवों द्वारा, न तप द्वारा, न दान द्वारा और न ही यज्ञ द्वारा इस रूप में देखा जा सकता है, जिस रूप में मुझे तुमने देखा है। लेकिन अनन्य भक्ति द्वारा, हे अर्जुन, मुझे इस प्रकार (रूप को) जाना भी जा सकता है, देखा भी जा सकता है, और मेरे तत्व (सार) में प्रवेश भी किया जा सकता है, हे परंतप।

क्रमशः

Payment method

चेक / ड्राफ्ट श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान के नाम पर बनाए और आपको दिये गये फॉर्म पे जो पता लिखा है उसपे भेजें। या I.D.B.I. बैंक की किसी भी शाखा में श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान के I.D.B.I. Bank's Saving A/c No. 289104000033974 में जमा करवा सकते हैं।

नकद भुगतान के लिए कृपया अपने स्थानीय संपर्क व्यक्ति को फोन करें जीनके नंबर नीचे दिये गये हैं।
Vadodara - Gunjan Shastri-9374065710
Sampadak-Satna - Kalpana Katare- 6261084284

Burhanpur - Nitinbhai Patil-8989520502
Junagadh - Bhaveshbhai - 7984025185
Bombay- Apurva Kadakia -80970 47471

Devine Thoughts PUSHTI SEVA

Pushtiseva is most effective, scientific and very highly beneficial for a jivatman. Surrender, dedication and devotional love dispel anger, greed and passion.

Dear friends,

Therefore the dedication to *Bhagavan* is the only and the excellent means to get our sense -organs withdrawn from the lustful passionate enjoyment. Similarly the mind is the centre of desires, passions etc. The mind is a manufacturing factory of millions of passions and desires. These too are simply for passionate enjoyment of worldly objects; therefore the mind which is ever perturbed with the passions and chasing the objects of the sensuous enjoyment is absolutely incapable to get the devotional love installed towards *Bhagavan* in itself. Therefore for the inculcation of devotional love towards *Bhagavan* into our minds; the passionate desires, should either be destroyed or be controlled invariably. Controlling of the extremely powerful passions of the mind is equivalent to stop a race - horse or catching hold of the wind in a rapid tumultuous cyclone. Control of the passionate desires in the mind or their annihilation or transformation can be feasible only by a thing inherent in the mind or by a thing which has an access to the mind. Therefore Shree *Vallabhacharyaji* has given the supreme importance to the tender love in the matter of devotion. Just as the mind is the centre of the desires, similarly the love is also a characteristic of mind. Therefore in proportion to the increase of love towards *Bhagavan* in our mind the contact with other things or those related to sensuous enjoyment would get gradually weakened and finally destroyed. It is commonly observed that when one gets involved in deep love with someone else his or her mind gets automatically disinterested in other matters. In the same way the mind, which mostly wanders gets, stabilized in one individual or any matter related with such a person. Therefore Shree *Vallabhacharyaji* states in his treatise named "*Bhaktividhini*" *snehad ragavinashah syat* (the destruction of the infatuation is



Puja Shri Brijlata Bahiji

caused by love) the mind which is ardently devoted to *Bhagavan* gets itself beyond the infatuation and the worldly attachment.

In the same way in *Dasa-bhava* (the exclusive sense of servitude towards *Bhagavan*) accrued from the surrender to *Bhagavan* destroys all types *Bhagavan* in the *jivatman* like 'amsho'ham (I am the amsha of the *Bhagavan*) in the rise of such adherence to the resort of *Bhagavan* lies the removal of all the miseries of a *jivatman* because the sense, 'I am a *jivatman*' is the very root of every misery experienced by a *jivatman*. One who believes oneself to be a *jivatman* has the sense of "this is mine and this is belongs to others, this is less and this is more, this is small and this is big" such sense of distinguishing gets succumbed to the instinct of creating distinctions and this further makes us prone to revenge, jealousy, arrogance, anger, passion and such other terribly torturing diseases.

Thus this exclusive sense of servitude towards *Bhagavan* gets us the obtainment of the divine sense of being the *amsha* which is of immense importance of the path of knowledge believe that the exclusive sense of servitude towards *Bhagavan* in the path of devotion is the factor responsible for the increase of the inferiority-complex; what good can it do for us? But in reality any complex like that of inferiority or superiority is the cause of misery and it is misconceived.

The exclusive sense of servitude towards *Bhagavan* described in the path of devotion is devoid of either of these two types of complexes and is real. Any type of complex is a common materialistic concept and therefore on account of the sense of distinction caused by the ne-science these two complexes make us recognize the high and low with reference to the common material objects. The difference like high and low, more or less, big and small etc. caused by the nescience or the sense of illusion leads us to draw the lines imagined by our minds which cause these complexes and also develop them. The earth revolves round the sun, so at twelve noon we call the part of the sky above our head as the above and the earth on which we stand and the part of it in the liner position of it are called the 'below' by us. But we call the same portion which we called ass 'below' at noon as the 'above' at midnight and what we described as 'above' gets recognized as 'below' at midnight.

Continue...

श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान

Visit us at www.gopinathji.org

यथार्थ संपादक मंडल

श्रीमती प्रभाबेन शास्त्री

श्रीमती कल्पना कटारे

कृ. निमिषा बेन पारेख

यथार्थ व्यवस्थापक मंडल

श्रीमती गुणजनेन शास्त्री

श्री उमेश भाई वैष्णव

संस्थान के कार्यक्रमालय

- यथार्थ मार्ग (मासिक पत्रिका)
- ओडियो प्रवचन केसेट, पुस्तक प्रकाशन, और वितरण
- गोंदेवा
- अशक्त आर्थिक तकनीक वाले व्यक्तियों की सहायता
- सामान्य स्थिति वाले छात्रों को मदद
- सत्त्वंग सजो का आयोजन
- भोजन सेवा • वक्त्र सेवा • विद्या दान
- औषधि सेवा • अन्न दान

वडोदरा कार्यालय का समर्या
(सुबह ११ से शाम ५)

सम्पर्क - मोबाइल
98255 13317, 9998107541

ट्रस्ट र.नं. (ई-४३७५(मेहसाणा)) ता. १६ मार्च २००५)
इन्कम्टेक्स करनुकीत का लाभ श्री उपलब्ध है
CIT/GNR/80G(5)/PTN-37/07-08/3233/12-13

द्रोत्सव टीप्पणी भाष्य दिसावर		
ता.	वार	तिथि
कार्तक वर्ष		
३	सोम	१५
४	बुध	१६
६	गुरु	१८
७	शुक्र	३०
माघशर वर्ष		
८	शनि	१
१२	बुध	५
१४	शुक्र	७
१६	रवि	८
१७	सोम	९
१८	बुध	११
२२	शनि	१५
माघशर वर्ष		
२३	रवि	१
२८	शुक्र	७
३०	रवि	८

विवर:

१५ तिथि अकादशी व्रत.
श्री गुणांधुना साप्तम लालश्च श्री धनश्यामश्च (प्रज विसं. १६२८) नो उत्सव.
दर्श अमावास्या.
अन्यादान.

१६ तिथि.
श्री मदन-मोहन प्रभु (कामवन) नो पाटोत्सव.
श्री गुणांधुना चतुर्थ लालश्च श्री गोकुलनाथश्च (प्रज विसं. १६०८) नो उत्सव.
सूर्य धन राशी-मूल नक्षत्रमां ५.०८-११ थी, धनुर्मास प्रारंभ,
आषाढी एक मास पर्यन्त श्रीप्रभुने विशेषतः उत्तिष्ठापन करवा.
श्री गुणांधुना उत्सव नी बधाइ श्रीनाथद्वार मां आषाढी.
मोक्षादा एकादशी व्रत, श्रीमद भागवदगीता ज्यन्ती.
अन्यादान, गोपमास-प्रत्ययां समाप्त, श्री ललदेवश्च नो उत्सव.
श्रीनाथद्वार-श्रीधुमां उप्पनभोग.

१७ तिथि.
श्री गुणांधुना जयेष्ठ पौत्र अने श्री गोविन्दारायश्च ना लालश्च
श्रीकालामारुपायश्च (प्रज विसं. १६२५) नो उत्सव.
श्री मत्स्यवर्ष श्री विष्णुनाथश्च श्री गुणांधु (प्रज विसं. १५७२)
नो प्रार्द्धाव भोवत्सव, (५० मा वर्षां म प्रवेश).

This is the story of a prince called Rama, who fell in love with a beautiful princess called Sita, Rama and Sita got married. The king Dasharath wanted Rama to become king but one of his wives asked in return of her boon that her son Bharat to be made king and Rama to be sent into the forest for 14 years. The king was very sad but he had promised his wife she could have anything she wanted, so he sent Rama. Sita and Rama's brother Lakshman also went with him. They obediently lived in the forest for many years.

There was also a terrible demon king, Ravana. He had twenty arms and ten heads and was feared throughout the land. He wanted to make Sita his wife, one day a golden deer ran by them and Sita asked Rama and Lakshman to catch the deer for her as it was so beautiful. Rama chased the deer but it had all been a trick to get Rama away from Sita.

When Rama did not return

while Sita was alone a Ravana He asked Sita for somewhere to drink. Ravana took Sita to his Sita left a trail of her jewelry for Rama followed the trail of monkey king, Hanuman, who help find Sita. Messages were sent and through them to all the bears, who set out to find Sita.

When Hanuman told Rama where she was and then Rama went to fight Ravana, who sent his army to fight the battle with Rama and Hanumans army.

They fought for a long time until the only one left was Hanuman. He found some herbs to bring them all back to life, then Rama fought Ravana and killed him with a magical spear, Rama and Sita were together again. the whole world rejoiced. Rama and Sita began their long journey back to their land, and everybody lit oil lamps to guide them on their way and welcome them back. Rama was crowned king and Sita was his queen, and everyone in the kingdom was very happy.

Ever since people light lamps at Diwali to remember that light triumphs over dark and good triumphs over evil.



Lakshman went to look for him, came by in the holy man costume. rest and have some food and castle on a remote island. Clever Rama to follow. glittering jewelry until he met the became his friend and agreed to to all the monkeys in the world,



DHARM PUZZLE

- Trupti Abrol

D	R	P	Z	M	M	H	N	W	X	R	G	Q	T					
C	A	H	O	A	A	I	A	X	N	D	T	M	I	M				
G	T	D	J	L	K	H	N	W	I	Y	Q	B	C	I	Z			
B	D	D	H	O	X	A	A	D	F	L	O	B	H	N	M	O	A	
R	R	Z	A	O	R	R	S	M	A	C	F	R	B	S	A	G	M	O
A	T	Q	S	D	B	S	H	A	P	J	U	C	N	H	O	I	X	X
F	J	J	T	I	L	A	I	N	I	U	N	R	S	I	N	R	G	V
G	F	S	A	A	D	N	V	J	A	D	Y	O	A	H	R	A	N	Z
I	O	R	M	H	A	K	A	A	B	U	C	D	T	U	K	M	I	D
Q	X	I	B	O	R	R	Y	M	N	G	A	R	P	S	L	R	A	L
S	J	H	D	I	N	T	N	A	A	T	R	A	K	W	O	I	E	F
X	T	Q	G	W	L	T	R	T	J	A	U	B	V	I	B	W	M	M
K	M	E	A	I	A	I	I	I	H	G	A	B	L	M	N	M	A	S
S	H	F	D	W	V	R	C	R	N	I	O	I	R	E	L	V	Y	N
G	G	J	E	G	A	Y	H	A	D	H	F	Y	T	H	Y	A	R	F
Y	U	H	H	I	P	S	S	H	C	X	R	D	O	J	D	N	X	S
V	O	G	A	Y	E	H	A	R	S	I	R	T	A	R	V	A	Y	G
I	I	R	N	E	N	D	M	V	V	G	M	Q	S</					



दीपावली के पावन पर्व की बधाई।

-कल्पना कटारे

आसों मास के तीन और नए साल के दो दिन मिलाकर जो पाँच दिन हैं, इन पाँच दिन को एक शब्द में दीपावली कहते हैं। दीपावली सबसे प्रमुख त्योहार है। कार्तिक माह की अमावस्या के दिन भगवान राम १४ वर्ष के बनवास के बाद अयोध्या लौटे थे, इस खुशी में अयोध्या वासियों ने दीये प्रज्वलित कर उनका स्वागत किया था। श्रीकृष्ण ने नरकासुर नामक राक्षस का वध भी इसी दिन किया था। यह दिन भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी है। इन सभी कारणों से हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं।

दीपों का त्योहार दीपोत्सव के दिनों के लिए घर में साफसफाई कर के वातावरण को पवित्र बनाया जाता है। और धूपदीप के साथ लक्ष्मी पूजन भी होता है। पर इन दीपों से बाहर का अँधेरा थोड़ी देर के लिए जरूर दूर होता है किन्तु हृदय का अँधान रूपी अँधेरा तो सत्संग, स्मरण, कीर्तन दर्शन और प्रभुसेवा से ही दूर हो सकता है। और ऐसा सत्संग, स्मरण, प्रभुसेवा ..केवल गुरुभक्ति और गुरुकृपा से ही प्राप्त हो सकती है। जिस प्रकार सालभर में जो अनावश्यक वस्तुएं घर में एकत्रित हुई उन्हें हम दीपावली के पहले बाहर निकाल देते हैं वैसे ही हमारी जन्मों जन्मों से एकत्रित हुई अशुभ कर्मों की कलमश गुरु कृपा से प्राप्त ज्ञान से दूर हो।

'प्रभु ही मेरे सब कुछ हैं' यह भाव हृदय में प्रकाशित करने ही दीपावली के दीपों की महत्ता है। और यही आंतरिक भाव को प्रकाशित करने हेतु हमारे श्रीगोपीनाथ जी प्रभुचरण दिवाली के पर्व पर प्रभु से विनती करने को कहते हैं.....हे द्रव्याधिप! जिस प्रकार आपने नन्दरायजी द्वारा किये गये दीपावली के लौकिक विधान को, लौकिक परम्पराओं के विधान को अपनी आत्मा में उन भक्तों को प्रवेश देने के लिए स्वीकार किया था, वैसे ही मेरे पूर्वकृत कर्मों को भुलाकर अपनी स्वीयता (तू मेरा है इस भाव) की सिद्धि के लिए मेरे द्वारा समर्पित दीप आदि सर्व सामग्री को अंगीकार कीजिए।।

धनतेरस

भविष्य पुराण के अनुसार आज के दिन लक्ष्मीजी के साथ धनवन्तरिजी की विधिपूर्वक पूजा करने से धनसंपत्ति की वृद्धि और शारीरिक एवं मानसिक



आरोग्य की प्राप्ति होती है।... ये मर्यादा मार्गीय जीव के लिए है। श्रीमहाप्रभुजी ने चतुर्थश्लोकी में पुष्टि जीव के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को समझाते हुये श्रीकृष्ण को ही हमारा सच्चा 'धन' कहा है। आज के शुभदिवस पर हमारा प्रभु के चरणों में ब्रह्म विश्वास और भक्ति रूपी धन में वृद्धि हो, लक्ष्मी रूपी लौकिक धन का विनियोग अलौकिक धन रूपी लक्ष्मी पति की सेवा में हो, और प्रभुचिंतन द्वारा प्रभु की लीला रूपी 'धन्य रस' का अनुभव हर पल बढ़ता रहे यही धनतेरस के शुभदिवस पर मनोकामना और शुभकामना...।

SARASWATI TEXTILES
H.NO.33, GALA NO.105, NEW
KANERI,
PADMANAGAR, FULEWADI
COMPOUND ,
BHIWANDI- 421302

Haresh V Kukreja
Mobil no
8879358237.9323808748



पिछले कई सालों से देश में गौहत्या के विरोध में गौरक्षा का अभियान चल रहा है। होना भी चाहिए, कई धार्मिक संस्कारों की तरह गौरक्षा का विचार अपने आप में एक सुंदर विचार है। गौमाता जो आजीवन हमें अपने दूध-दही-घी, आदि से पोषित करती है, गौमूल्र विज्ञान की दृष्टि से भी और ज्ञान की दृष्टि से भी गुणों से भरा है। एसे अपने इन सुंदर उपहारों से जीवनभर हमारा हित करती है। जिसकी रचना भगवान ने मनुष्यों के कल्याणार्थ आशीर्वाद रूप से की है। अतः इस पृथ्वी पर गौमाता मनुष्यों के लिए भगवान का प्रसाद रूप है। और इस लिए ही हमारे शर्तों ने भी गौ को माता कहा है। गौमाता हमारी वैदिक संस्कृति, धर्म, संस्कार एवं सभ्यता का प्रतिक है।

गौमाता की रक्षा के लिए देश के कोने-कोने में न जाने कितने रक्षा दल बने हैं। सरकार ने भी कई राज्यों में गौहत्या के लिए कई कानून लागू किये हैं। जिसके अन्तर्गत गौहत्या करने वालों को उम्रकैद की सजा हो सकती है। इस नियम का उद्देश्य गाय लाने-ले जाने, काटने और गौमांस बेचने पर रोक लगाना है। भारत के २९ में से १८ राज्यों में गौ-हत्या पर पूर्ण या आंशिक रोक है। और गुजरात में पहले से भी गौ रक्षा का कानून और कड़क बना कर गौ हत्या लिए गुजरात के शर्त कानून के सराहना की जय करते हैं।

लेकिन गौ-हत्या पर पूरे प्रतिबंध के मायने हैं बैल, सांड और भैंस को काटने और खाने की नहीं है? क्या वो जीव नहीं हैं? अगर आप हिन्दू हो तो गौमाता हमें इतना कुछ देती है तो बैल भी खेती में हल है। ऐसे कई मूक प्राणी हैं जो हमारे बोझ ढोते हैं और जीते हैं, यह संसार में एक संत की तरह है, निर्स्वार्थ। लेखक- श्री गिरीराजजी शास्त्री जी दायित्व है।

पर ऐसा होता नहीं है, बल्कि गौरक्षा का भी मुद्दा जब जब उठा है तो सिर्फ राजनीति करने के लिए या फिर सुर्खियों में बने रहने के लिए.. जब कि कई तो गौरक्षा कैसे होगी, ये जानते तक नहीं। भारत की ८० प्रतिशत से ज्यादा आबादी हिन्दू है जिनमें ज्यादातर लोग गाय के माता तो कहते हैं, पर उसकी रक्षा के लिए कुछ भी नहीं करते। गौ को माता मानते हो, पूजते हो, लेकिन सच में हमारा असली उद्देश्य गौरक्षा होता तो आज गाय बाहर सड़को पर लावारिस, भूखी, करचे के ढेर से भूख भिटाती देखने ना मिलती। आज ८५ प्रतिशत लोगों के पैरों में चमड़े के जूते होते हैं, करीब ७० प्रतिशत लोगों की जेब में चमड़े के वोलेट और पर्स हैं, वह न होते।

गाय के बारे में हिन्दू समाज का रवैया ही सही नहीं है। वो सिर्फ गाय को माता कहते हैं, उसे तिलक लगाते हैं और उसके नाम पर झगड़ा करते हैं और कुछ लोग गौरक्षा रैली निकालने को रक्षा का तरीका मान लेते हैं! इससे होगी रक्षा!! अरे सच में हिन्दू धर्म को मानते हो तो शास्त्र में बताये सभी धर्म का पूरी रीत से पालन करो, हमारे धर्म में केवल गाय को ही नहीं पृथ्वी और नदी को भी माता कहा है, उनकी रक्षा भी समाज का दायित्व है। पर उसकी रक्षा के लिए कोई सार्थक प्रयास नहीं करता। वास्तव में गौमाता की सेवा और रक्षा करना चाहते हैं तो...ऐसे करें गौरक्षा---

घर में गौ ग्रास जरूर निकालें, हरी सब्जी का उपयोग करने के उपरांत जो हरा चारा निकलता है उसे कूड़ा दान में न डालते हुए गौमाता को खिलाएं, रोज अपनी कमाई का कुछ अंश गौमाता के लिए निकालें व इसे गौमाता के लिए ही खर्च करें, या किसी गौशाला में जाकर भी इस राशिको दान कर सकते हैं। अपने घर में छोटे बच्चों को गौमाता का महत्व समझाएं, ऐसी वास्तु का उपयोग करने से बचें जिसको बनाने हेतु गौ को कष्ट व पीढ़ पहुंचाई गई हो, गौमाता पर हो रहे अत्याचारों को रोकने में अपना सहयोग प्रदान करें, शाकाहारी बनें, माँसाहारियों का सामाजिक बहिष्कार करें....ऐसी गौमाता जो हमारे कृष्ण को भी अत्यंत प्रिय है, गौमाता की कई सेवाएँ हैं जिसका पालन हिन्दू होने के नाते हमें करना चाहिए। जैसे कि तुरंत कुछ न कर सके तो एक कार्य जरूर करें कि हमारे पूरे परिवार के लोग आज से गाय का ही दूध पीने का व्रत आग्रह पूर्वक लेते हैं, ऐसा नियम लेने मात्र से ही पूरी एक कोलोनी के लोग अगर यह व्रत लेते तो ग्वाले को गाय का दूध आपको देने हेतु गाय का पालन पोषण करना ही होगा और गाय की रक्षा और सुरक्षा में आप अपना योगदान दे सकेंगे और गाय के दूध से मिलने वाले आयुर्वेदिक स्वास्थ्य लाभ को भी प्राप्त कर अपने बच्चों और औरों को समझा सकते हैं।

पुष्टिमार्ग में भी भगवदसेवा के अंग रूप गौसेवा का विधान है। हमारे श्रीवल्लभ, श्रीगोपीनाथ एवं श्रीविष्णु नाथ भी गौ के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। व्रज में गौरक्षा के हेतु ही श्री विष्णुनाथजी को "गोस्वामी" अर्थात् गोकुल के श्रीगोपीसाई के सम्मान से विभूषित करते हुए यह पदवी भेट की गई थी।

गौसेवा एवं गौरक्षा वैदिक धर्म में आस्था रखनेवाले प्रत्येक जीव का कर्तव्य-धर्म है। हम स्वयं ही गौमाता की ऐसी सेवा, पूजा करें कि आसपास के और विरोधी धर्म के लोगों के भी गौमाता के सजदे में सर झुक जाए।

कई लोगों ने गाय को 'राष्ट्रिय पशु' घोषित करने की भी मांग करी है, पता नहीं इससे क्या ज्यादा बदलेगा! तत्कालीन समय में देश में हिन्दूओं के मध्य ही मतभेद हैं, और धर्म के नाम पर कुछ लोग इसे बढ़ाने के लिए अवसर की तलाश में रहते हैं, हमारा देश हिन्दू प्रधान देश अवश्य है पर केवल हिन्दूओं का देश नहीं है। ऐसा कर के दूसरे धर्म के लोगों को अलग-अलग करने की कोशिश करते रहे हैं।

धर्म के नाम पर किसी भी प्रकार की लड़ाई करने से पहले एक हिन्दू नागरिक होने के नाते स्वयं हम गौसेवा कर के अपने धर्म के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करें ये अति आवश्यक है। धर्म की रक्षा आवश्यक है, पर धर्म की रक्षा जुलूस या रेली निकाल कर नहीं होती, धर्म की रक्षा के लिए धर्म का आचरण अनिवार्य होता है।